

मेरी परिस्थिति, मेरी स्थिति

निम्न लिखित प्रश्न अपने आप को जानने में सहायक होंगे। हर प्रश्न के साथ कुछ विचार रखे गये हैं। कुछ नकारात्मक हैं, बाकी सकारात्मक हैं और उपयुक्त हैं। अपने वृत्ति, भाव, भावना को भिन्न भिन्न परिस्थिति में परख ले।

इन पर ध्यान दें

- वर्तमान समय में एक या कुछ विचार आप को लागू होंगे।
- एक या कई विचार धारणा करने उचित होंगे।
- आप अपने बारे में जो सोचते हो वह शायद ठीक न हो।
- आप अपने बारे में जो सोचते हो शायद कल वह विचार बदल जायेगा।
- यथार्थ मनोभाव को और विचारों का निर्णय और मूल्यांकन स्वयं करे।
- यह विचार ब्राह्मण जीवन के हर स्थिति में लागू होता है।

बी.के. होने के नाते मेरा और मेरे क्षमता के बारे में मेरा विचार और भावनायें क्या है?

- ☐ मैं बाबा के आशाओं को पूर्ण नहीं कर पाऊंगा(गी)।
- ☐ मैं बाबा का अच्छा बच्चा(च्ची) नहीं हूँ, क्योंकि मैं अब कमजोर हूँ।
- ☐ बाबा ने मुझे चुना है तो मैं विशेष आत्म हूँ।
- ☐ अब मेरी स्थिति कैसी भी हो, मैं मंजिल तक पहुँच जाऊंगा(गी)।
- ☐ कल मुझे क्या होगा मुझे मालूम नहीं।
- ☐ मेरे बारे में मुझ से ज्यादा बाबा जानते हैं इसलिए चुना है।
- ☐ मैं माया को या कमजोरी को सम्पूर्ण जीत नहीं सकूँगा(गी)।
- ☐ सम्पूर्ण माया जीत बनने के लिए ही मुझे चुना है।
- ☐ मैं बाबा का राईट ह्यांड हूँ।
- ☐ परम प्यारे बाबा के हाथ मैं ओर मेरा भविष्य सम्पूर्ण सुरक्षित है।

लौकिक परिवार जो ज्ञान में नहीं चलते उनको मैं किस नजर से देखता(ती) हूँ?

- ☐ उन के साथ निभाना मुश्किल है।
- ☐ वे भी मेरे दैवी परिवार के सदस्य हैं।
- ☐ वे नहीं बदलेंगे।
- ☐ मुझे देख वे भी बदलेंगे।
- ☐ मेरे मार्ग पर वे विघ्न रूप हैं।
- ☐ मुझे उनकी सेवा करनी चाहिए। घर से ही शुरू करना है।
- ☐ मैं उन को टालता(ती) हूँ।
- ☐ मैं अपने दैवी चलन से उन को जीत लूँगा(गी)
- ☐ उन को देख कर मुझे डर लगता है बेचैनी होती है।
- ☐ वे भी बाबा के बच्चे हैं।

कर्म क्षेत्र में (स्कूल/कालेज/आफीस) मेरा क्या विचार है? मेरे सहोद्योगी/मित्र के बारे में मेरी भावना क्या है ?

- ☐ मैं बाबा की सेवा में हूँ; मैं यज्ञ में हूँ।
- ☐ मुझे लगता है की मैं गलत स्थान पर हूँ; मुझे चैन नहीं।
- ☐ अच्छी चाल चलन से बाबा को प्रत्यक्ष करना है।
- ☐ वायुमंडल नकारात्मक है; लोगों की वृत्ति खराब है; बहुत माया है।
- ☐ सभी बाबा के बच्चे हैं; वे मेरे भाई आत्म हैं।
- ☐ मैं कर्म में सम्पूर्ण मग्न रह कर उसी में डूबा रहता(ती) हूँ।
- ☐ मैं ट्रस्टि बन कर कार्य करता(ती) हूँ; कार्य मे बाद घर चलता हूँ।
- ☐ मैं कार्य करते बाबा को और परिवार को भूल जाता हूँ।
- ☐ मैं बाबा को याद करता(ती) हूँ।

मुझे संघटन में या कहीं भी बी.के. को देखते क्या लगता है ?

- ☐ आत्म हैं, परमधाम से, सत्ययुग से आये हैं।
- ☐ दैवी भाई या बहन हैं।
- ☐ मेरा सत्ययुग का परिवार है।
- ☐ मेरा ब्राह्मण परिवार है; ब्रह्मा की सन्तान।
- ☐ उन से दूर होने को मन नहीं करता; मैं परिवार से जुट जाता(ती) हूँ।

मेरे आस पास की दुनियाँ को देख क्या भावनायें आती हैं ?

- ☐ मुझे दुनियाँ से आकर्षण होता है ।
- ☐ मुझे दुनियाँ से दूर जाने का मन होता है ।
- ☐ मैं दुनियाँ से न्यारी हूँ । मुझे कोई प्रभाव नहीं होता ।
- ☐ स्थान के आधार से मेरे स्थिति में अंतर आता है ।
- ☐ मुझे इस दुनियाँ से नफरत है ।
- ☐ ऐसी दुनियाँ का परिवर्तन मुझे करना है ; बदल ने के लिए ही मैं यहाँ हूँ ।
- ☐ यह दुनियाँ विनश होगी ।

मेरे आस पास के युव वर्ग को देख क्या लगता है?

- ☐ उन जैसा मैं बनूँ!
- ☐ उन को देख मुझे दुःख होता है ।
- ☐ कभी नकारात्मक, कभी सकारात्मक भावनायें आती हैं ।
- ☐ उनकी सेवा करने का मेरा संकल्प दृढ़ होता है ।
- ☐ मैं उन का उपेक्षा करता(ती) हूँ ।
- ☐ मैं अपने को बहुत भाग्यशाली समझता(ती) हूँ ।
- ☐ वे भी बी. के. बनने का सपना देखता(ती) हूँ ।
- ☐ उन को मुक्त करने मैं यहाँ हूँ ।

दूसरें बी.के. को देख मुझे क्या लगता है?

- ☐ मैं जैसे उनकी स्थिति समझता हूँ उस अनुसार कभी अपने को ऊँच/नीच समझता(ती) हूँ ।
- ☐ मैं अपनी स्थिति की तुलना किसी से नहीं करता(ती) । उसका प्रभाव मुझ पर नहीं पड़ता ।
- ☐ मेरे सामने आने वाली आत्माओं के आधार पर मेरी स्थिति बदलती है ।
- ☐ स्थिति कैसे भी हो मेरे भाई बहनों को देख कर मुझे खुशी होती है ।
- ☐ बड़े और अच्छे पुरुषार्थियों का मान रखता(ती) हूँ, सब के प्रति मुझे शुभ कामनायें हैं ।

अमृत वेला में

- ☐ मुझे नींद आती है, सुस्ती आती है ।
- ☐ मैं जागृत रहता(ती) हूँ, मजा आता है ।
- ☐ मुझे जो शक्ति चाहिए बाबा मुझ में भरते हैं, यह बड़ा अमूल्य समय है ।

मुरली सुनते समय

- ☐ मन नाचता है, बाबा मेरे लिए सुना रहे हैं ।
- ☐ मेरे जीवन के हर परिस्थिति का समाधान मुरली में है ।
- ☐ मुझे यह एक नित्य कार्य लगता; एकाग्रता नहीं होती ।
- ☐ मुरली पढ़ने का तरीका मेरे सुनने पर प्रभाव डालता है ।

पुरानें संस्कार से आने वाले व्यर्थ/नकारात्मक/कमजोर/बुरे संकल्पों के तूफान मेरे मन में आता है तो—

- ☐ नहीं, मुझे यह परिस्थियाँ आती नहीं, मैं उस से पार हूँ!
- ☐ इसी को तो मुझे जीतना है; मैं इस के लिए ईमानदारी से पुरुषार्थ कर रहा(ही) हूँ ।
- ☐ यह मेरे कर्म और संसार का फल है, मैं अवश्य विजई बनूँगा(गी) ।
- ☐ मैं निराश और दिलशिकस्त होता(ती) हूँ ।
- ☐ मुझे डिस्टर्ब होता है और पुरुषार्थ में आसक्ती और विश्वास नहीं रहता ।
- ☐ माया के साथ युद्ध करने का और तीव्र पुरुषार्थ करने का संकल्प दृढ़ होता है ।
- ☐ माया के संकल्प मुझे मार्ग से और लक्ष्य से हटा नहीं सकते ।
- ☐ तूफान त्योफा है; मेरे साथ सर्वशक्तिवान बाप हैं; मैं मजबूत होता जाता(ती) हूँ ।

जब कोई(लौकिक/अलौकिक) मेरी

निंदा/डिस्टर्ब/गाली/तंग/ग्लानी करता है

- ☐ मुझे अपसेट होता है, डिस्टर्ब होता है, उन पर क्रोध आता है ।
- ☐ मैं उन के साथ नहीं रह सकता(ती) नफरत आती है ।
- ☐ मैं उसे क्षमा करूँगा(गी) परिस्थिति को भूल जाऊँ और शुभ भावना रखूँगा(गी) ।
- ☐ मैं उस व्यक्ति और परिस्थिति को भूल नहीं सकता(ती) ।
- ☐ मेरी सहन शक्ति की भी सीमा है, समय पर मैं भड़क जाऊँगा(गी) ।
- ☐ मेरी स्थिति को परखने की यह एक मोका है । मैं सहनशीलता और धीरज धारण करूँगा(गी) ।
- ☐ मेरी भूल हो तो मैं ठीक कर लूँगा(गी) । बाकी भूल जाऊँगा(गी) ।

- मैं कर्म की गुह्य गती का ज्ञान का उपयोग करूंगा(गी) ।
- मैं जानता(ती) हूँ की वो माया के प्रभाव में है । मुझे उन क बारे में अच्छी भावना हैं ।

अंदर की कमजोरी और कठिन परिस्थिति से सम्पूर्ण दिशाहीन हो जाऊ तो क्या करू?

- मुझे ऐसी परिस्थिति नहीं आयेगी । मुझे ऐसे नहीं लगता ।
- अपने आप को और अपनी तकदीर को कोसूंगा । मूड खराब हो जायेगा ।
- बाबा और दैवी परिवार मेरी सहायता नहीं करता तो मैं स्वयं लडूंगा(गी) ।
- मैं जानता(ती) हूँ की यह माया का युद्ध है । मेरी परीक्षा हैं इसलिए धीरज से काम लूंगा(गी) ।
- मैं बाबा के ईशारे का इंतजार करूंगा(गी), शांति में जा कर बाबा को समर्पण करूंगा(गी) ।

बीमारी के समय, विपरीत परिस्थिति में

- मेरी देखभाल के लिए, और मेरी भावनाओं को बाटने कोई चाहिए ।
- मैं दैवी परिवार से सहायता की अपेक्षा करूंगा(गी) वरना मुझे बुरा लगेगा ।
- बाबा मेरा साथी हैं । मुझे किस तरह संभालना हैं वे जानते हैं । मेरा जीवन उन के हाथ है ।

मैं जब दूसरों की कमजोरी/नकारात्मकता को देखता(ती)

- मुझे आश्चर्य होता है, ऐसे मैं अपनी कमजोरियों को छिपाता(ती) हूँ ।
- उन पर दया आती है और उन पर शुभ भावना रखता(ती) हूँ
- मुझे क्रोध आता हैं उनके पभाव में आता(ती) हूँ ।
- सभी अपने ,कमजोरियों को मिटाने की पुरुषार्थ में लगे हैं ।
- इस तरह की कमजोरियों के वश न हो इस का ध्यान रखता(ती) हूँ ।
- मेरा पुरुषार्थ इस से मुक्त हैं, मेरी मंजिल अन्य आत्मों के प्रभाव से दूर रहने का है ।
- यह आत्म अवश्य बदलेगी ।

आज तक मेरा बी.के. जीवन

- मुझे तृप्ती हैं । मैं शक्तिशालि हूँ ।
- मुझे तृप्ती नहीं, बाबा को दिया हुआ वचन नहीं निभाया ।
- मैंने इतनी साधना नहीं की हैं; मुझ में कमजोरी है जो बी. के. में नहीं होना चाहिए ।
- मेरी स्थिति ऊपर नीचे होती रहती हैं; जैसी परिस्थिति वैसे मेरा जीवन ।
- श्रेष्ठ स्थिति पाने की मेरी इच्छा हैं और प्यारे बाबा मेरी सहायता करते हैं ।
- आज नहीं तो कल मैं अवश्य मंजिल पर पहुँचूंगा(गी) ; मैं नहीं तो और कौन?

पुरुषार्थ/सेवा/प्रगति – इस के बारे में मेरा क्या राय है? मेरा पुरुषार्थ और सेवा को पहचान मेरा उमंग बढ़ायेंगे तो खुश होगी ।

- मुझे गुप्त सेवा में खुश हैं ।
- फलना मुझे आगे बढ़ने नहीं देता; मेरे मार्ग में रुकावट डालता(ती) हैं ।
- बाबा ने जो भाग्य दिया है वह कोई छीन नहीं सकता ।
- हर परिस्थिति में मेरा योग ही मेरी प्रगती का मूल्यांकन हैं ।
- मेरा आंतरिक पुरुषार्थ व्यक्ति/परिस्थिति से भिन्न हैं ।

सेवा/कर्म के बारे में मेरी भावनायें क्या हैं ?

- फलना सेवा की इच्छा नहीं; हर सेवा का महत्व रखता(ती) हूँ ।
- मेरा विश्वास है की कुछ सेवासे(उदा:भाषण) अन्य सेवाओं को (उदा:साफ सफाई) अधिक अंक हैं ।
- कुछ सेवा करते मुझे देह अभिमान आता है ।
- घर में मुझे भोजन बनाना और कामों में मन नहीं लगता ।
- मुझे रोज का काम करने बहुत खुश होती है; उसका महत्व मैं जानता(ती) हूँ और मैं उद्देश पूर्वक करता हूँ ।
- मुझे सेवाकेंद्र, घर और कर्मक्षेत्र में कोई भी काम करने में सकारात्मक भावना है ।
- बाबा का, दैवी परिवार का और सहोद्योगियों की प्रशंसा पसंद करता(ती) हूँ ।

मुझे इसकी स्मृती हैं ?

- मैं बी.के. हूँ, मुझे लोग महीनता से देखते हैं ।
- मैं भगवान की संतान हूँ । मेरे कर्म बी.के. योग्य हो ।
- मैं शांत स्वरूप हूँ इसलिए मुझे सब को शांति देना है ।
- मेरे संकल्प/कर्म/बोल/वृत्ति से किसी को भी लौकिक/अलौकिक को दुःख न हो ।
- मैं अगर भूल करू तो यज्ञ का नाम बदनाम होगा यह मैं जानता(ती) हूँ ।

किसी से बात करे तो(बी.के. या अन्य)

- मैं केवल काम/पुरुषार्थ/सेवा के बारे में बात करूंगा(गी) ।
- व्यर्थ और नकारात्मक चर्चा में मेरी रुचि है ।
- व्यर्थ और नकारात्मक बात होती तो मैं और बातें करूंगा(गी) ।
- हमारी बातों को दूसरों भी सुन रहे हैं, यह मैं जानता हूँ ।
- मैं देह अभिमान में आता हूँ ।
- चर्चा को बढ़ाना मुझे पसंद है ।

मेरे बारे में मेरी भावनायें क्या हैं?

- मैं कुमार/कुमारी/गृहस्थि/समर्पित/बंधन रहित होता(ती) तो अच्छा था ।
- मेरे पास अधिक धन होता तो पुरुषार्थ/सेवा अच्छा होता ।
- मैं यह/वह/काम/व्यापार करता, या फ्री होता तो बहुत कुछ कर पाता।
- मैं यहा/वहा/सेवाकेन्द्र में होता(ती) तो निर्विघ्न होता ।
- ये/वो मेरे साथ होते/ना होते तो मैं भाग्यशाली होता(ती) ।
- मुझे बहुत परिस्थिति है दूसरों को नहीं । दूसरें मुझे नहीं समझते ।
- सब माया से लढ रहे हैं । हम सब का शत्रु एक ही हैं – माया रावण ।
- ड्रामा में सब कुछ पफेक्ट है, मेरा पार्ट से मैं तृप्त हूँ ।
- बाबा इस ड्रामा को देख खुश है, सब का पार्ट से वे खुश है, मेरे से भी!
- मेरा पार्ट जो है जैसा है मुझे स्वीकार है । बाबा ने मुझे चुना है, यही मेरा सौभाग्य है । खिवैय्या मंजिल जानता हैं । जहाँ वो ले जायेगा वहाँ चलूँगा(गी) ।